# माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि का अध्ययन

अमन कृष्ण
एम.एड.,
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

**सारांश**

*प्रस्तुत शोध में बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर विभिन्न प्रकार से व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि पर शोध किया। इस अध्ययन हेतु बरेली जनपद के अलग–अलग माध्यमिक विद्यालयों के 900 शिक्षक–शिक्षिकाओं को प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि लिंग एवं क्षेत्रीयता पर आधारित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ।*

**मूलशब्द** : *माध्यमिक विद्यालय, व्यावसायिक प्रतिबद्धता, शिक्षण रुचि*

## 1. प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव प्राणी को जानवर से मनुष्य बनाने का कार्य करती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और जो कुछ भी वह सीखता है, वह समाज के द्वारा ही सीखता है शिक्षक को एक पथ प्रदर्शक के रूप में भी जाना जाता है, एक प्रभावी शिक्षक वह होता है, जो अनन्तकाल को प्रभावित करती है, शिक्षकों को भावी पीढ़ी को संवारने में विशेष भूमिका होती है, वह अपने छात्रों के समग्र अच्छा व्यवहार कर रहे हैं जो जीवन और ऊर्जा से भरे हुए हैं। शिक्षक जीवन बदलते हैं और इसलिए शिक्षक दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण में से एक है अब कौन से महत्वपूर्ण गुण हैं जो एक शिक्षक को विशिष्ट बनाते हैं, उनमें संचार, कौशल, मैत्रीपूर्ण रवैय्या, मजबूत, कार्यनीति, संगठनात्मक कौशल, धैर्य प्रतिबद्धता आदि यह सभी गुण शिक्षक को विशिष्ट होती है। एक शिक्षक में प्रतिबद्धता एवं रुचि की अहम भूमिका होती है। एक शिक्षक में बहुआयामी प्रतिबद्धता होती है। एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों के प्रति–अपने आप के प्रति, अपने समाज के प्रति व अपने देश के प्रति, शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध होता है, जिसमें जोश, उत्साह, रुचि होती है। वह हर काम को जोश व जुनून के साथ करते हैं, वह अपने संगठन के उद्देश्यों व लक्ष्यों को पूरा करने में जी–जीन लगा देते हैं, क्योंकि किसी भी कार्य के प्रति शिक्षक की जबावदेही ही प्रतिबद्धता कहलाती है।

## 2. डबल स्टार फेलो 1994

इनके अनुसार व्यवसाय प्रतिबद्धता को एक व्यक्ति के अपने चुने हुए व्यवसाय या रुचि की लाइन के मूल्यों के प्रति और उस व्यवसाय में सदस्यता बनाये रखने की इच्छा के रूप में परिभाषित किया गया है।

## 3. अध्ययन के उद्देश्य

किसी कार्य को पूरा करने के लिए कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। विद्वान बी.डी. भाटिया के अनुसार ज्ञान के अभाव में अध्यापक उस नाविक के समान है, जो अपनी मंजिल को नहीं जानता और बालक उस पतवार विहिन नौका के समान है, जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी। अतः उपदेश्यों का निर्धारण किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए अति आवश्यक है।

1. लिंग के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि का करना और तुलना करना।
2. क्षेत्र के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि का अध्ययन और तुलना करना।

## 4. समस्या कथन

''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि का अध्ययन।

## 5.तकनीकी भाब्दों का अर्थ

### *5.1 माध्यमिक विद्यालय*

माध्यमिक विद्यालयों का अर्थ उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा–9 से 12 तक की कक्षाएँ संचालित होती हैं।

### *5.2 व्यावसायिक प्रतिबद्धता*

व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अर्थ व्यक्ति के किसी काम के प्रति दृढ़निश्चय का होना।

### *5.3 शिक्षण रुचि*

शिक्षण रुचि का अर्थ किसी भी शिक्षक की शिक्षण कार्य शैली से होता है।

### *5.4 व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं रुचि*

इसके अन्तर्गत मनुष्य वस्तुओं या क्रियाओं को चुनकर उसे पसन्द या नापसन्द के रूप में श्रेणी बद्ध करता है व्यावसायिक प्रतिबद्धता किसी व्यवसाय से सम्बन्ध जोडने वाली मान की संरचना है जब शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का काम के प्रति मन लगता है वह उनकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं रुचि है।

## 6.उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं का व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि शहरी क्षेत्रों में करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि ग्रामीण क्षेत्रों में करना।

## 7. परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में महिला एवं पुरुषों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 8. अध्ययन का परिसीमांकन

1. अध्ययन का क्षेत्र जनपद बरेली के माध्यमिक विद्यालयों को ही रखा गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बरेली के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में 900 का ही चयन न्यायदर्श के रूप में किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बरेली के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

## 9. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

मानव ईश्वर द्वारा रचित कृतियों में श्रेष्ठतम् है, क्योंकि उसके अन्दर वह क्षमता है कि वह अपने एकत्रित ज्ञात से लाभ उठा सके। मानव ज्ञान तीन पक्षों में विभक्त है–

1. ज्ञान का एकत्रीकरण
2. ज्ञान में वृद्धि
3. ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना।

**डब्ल्यू. आ बोर्ग (1995)** किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है, जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है। यदि हम साहित्य की समीक्षा द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान की नींव बनाने में असमर्थ होती है, जो हमारा कार्य सम्भवतः तुच्छ और प्रायः उस कार्य की पकड़ मात्र ही होती है, जो पहले किसी के द्वारा दिया जा चुका है।

**जॉन डब्ल्यू. वेस्ट (1959)** इनके अनुसार व्यावहारिक दृष्टि से मानव ज्ञान पुस्तकों से प्राप्त किया जा सकता है, अन्य चीजों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से ज्ञान प्राप्त करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है, ज्ञान के भण्डार में मानव का ज्ञान सभी क्षेत्रों में विकास का आधार है।

## 10. शोध कार्य की विधि

शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण या वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया गया।

## 11. अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद बरेली के समस्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयी को जनसंख्या हेतु चुना है।

## 12. प्रतिदर्श

शोधकर्ता ने शोध के लिए प्रतिदर्श का आकार 900 शिक्षक व शिक्षिकाओं को रखा गया है।

## 13. प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में परीक्षण हेतु आँकड़ों को संग्रहित किया तत्पश्चात् इसका मध्यमान तथा मानक विचलन एवं टी–अनुपात द्वारा मध्यमानों में विभिन्नता की सार्थकता की जाँच की गयी है।

## 14. निष्कर्श

1. प्रथम परिकल्पना बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में अन्तर नहीं है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि सामान्य शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि के मध्यमान से कम है।
2. द्वितीय परिकल्पना में माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता व शिक्षण रुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। में निकाले गये मध्यमान को देखने से पता चलता है कि महिला शिक्षकों का मध्यमान 422.54 है, जो कि पुरुषों के मध्यमान 422.73 से कम है। महिला शिक्षकों का मानक विचलन 42.03 है जो 42.11 से कम है एवं टी का दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि टी का मान 0.03 है जो कि सार्थकता स्तर 0. 05 पर तालिका मान 1.98 है, जो कि हमारे द्वारा निकाले गए मान से अधिक है शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में महिला एवं पुरुष में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. द्वितीय परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', में निकाले मध्यमान को देखने से पता चलता है कि शहरी शिक्षकों का मध्यमान पर 1.35 है जो कि ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान 423.93 से कम है शहरी शिक्षकों का मानक विचलन 42.93 है, जो 41.7 से ज्यादा है एवं टी का दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि टी का मान 0.043 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान 1.98 है जो कि हमारे द्वारा निकाले गए मान से अधिक है अर्थात् हमारे द्वारा बनाए गए शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण व शहरी शिक्षक के व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण रुचि के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 15. सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन जनपद बरेली के माध्यमिक शिक्षक को लिया गया है, जबकि आगे यह बेसिक शिक्षक परिषद व राजकीय महाविद्यालय तथा राजकीय पोस्ट ग्रेजुऐट महाविद्यालय के शिक्षकों पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के अन्य राजकीय कर्मचारियों पर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के गैर राजकीय कर्मचारियों पर भी किया जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, आर.ए. (2013). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
2. बुच, एम. बी. (1987). थार्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, एस.सी.ई.आर.टी.।
3. कपिल, एच.के. (2011). अनुसंधान विधियाँ, भार्गव प्रकाशन आगरा।
4. माथुर, एस.एस. (2013). शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
5. पाण्डेय, रामशकल (2010).उर्वायमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
6. श्रीवास्तव, डी.एन. (2007). अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, डी.एन. (2007). अनुसंधान विधियों, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
8. राय, पी.एन. (2013). अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
9. त्यागी एवं पाठक (2013). शिक्षा के सिद्धान्त और शैक्षिक समाजशास्त्र, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
10. गुप्ता, एस.पी. (2008). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।